PDC I
Sem-1

State : Elements

राज्य :→ State → राज्य के स्वरूप को (समझने हेतु) इन चार तत्वों का विस्तार से विवेचन निम्नलिखित है:-

(i) जनसंख्या (Population)
(ii) भूभाग (Territory)
(iii) सरकार (या शासन) (Government)
(iv) प्रभुसत्ता, या राजसत्ता (Sovereignty)

(i) जनसंख्या :→ कोई भी समाज मनुष्यों के संयोग से बनता है। राज्य ऐसा समुदाय है जिसमें बहुत सारे मनुष्य एकता के सूत्र से बंधे रहते हैं। अतः जनसंख्या राज्य का आवश्यक तत्व है। राज्य की जनसंख्या कितनी होनी चाहिए यह नियत नहीं है इतना ही कह सकते हैं कि इसकी पर्याप्त जनसंख्या होनी चाहिए जो जीवन के विविध पक्षों की देख-रेख कर सके। किसी राज्य की जनसंख्या के लिए यह जरूरी नहीं है कि वह एक ही जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा या संस्कृति से जुड़ी हो। परंतु एक ही राज्य की प्रजा या नागरिक होने के नाते उनकी निष्ठा का एक ही केन्द्र होना आवश्यक है।

(ii) भू-भाग → भू-भाग राज्य का दूसरा आवश्यक तत्व है। अन्य समुदाय या तो किसी एक राज्य के भीतर रहते हैं, या कभी-कभी वे अनेक राज्यों तक फैल जाते हैं; इसलिए उन्हें पृथक भूभाग की आवश्यकता नहीं होती है। परंतु राज्य के अस्तित्व के लिए यह जरूरी है कि उसकी जनसंख्या निश्चित भू-भाग में बसी हो जहाँ उसकी सत्ता निर्विवाद हो। कोई राज्य किसी दूसरे राज्य के भू-भाग में नहीं रह सकता।

जनसंख्या की तरह राज्य के लिए अपेक्षित भूभाग का भी कोई निश्चित आकार नहीं बताया जा सकता है। यह भू-भाग इतना बड़ा अवश्य होना चाहिए जहाँ राज्य की जनसंख्या कम-से-कम वित्तीय दृष्टि से आत्मनिर्भर

जीवन जी सकें। यह आवश्यक नहीं कि राज्य का सारा भू-भाग एक साथ हो, परंतु उसके भिन्न-भिन्न हिस्से आपस में प्रभावशाली ढंग से अवश्य जुड़े रहने चाहिए। खानाबदोश कबीले! — जो किसी निश्चित भू-भाग से नहीं बंधे रहते — राज्य की स्थापना नहीं करते चाहे उनमें किसी-न-किसी तरह का राजनीतिक संगठन विद्यमान हो। संघीय व्यवस्था के अंतर्गत एक ही भू-भाग पर दो तरह की सत्ता रह सकती हैं जिन्हें क्रमशः 'संघ सरकार' और 'राज्य सरकार' की सत्ता के रूप में पहचानते हैं।

(iii) सरकार (Government) राज्य का तीसरा मूलतत्व शासन-व्यवस्था या सरकार है जो राज्य की सेवाओं को जनसंख्या तक पहुँचा सके, राज्य के भू-भाग की रक्षा कर सके। राज्य के भीतर शांति और व्यवस्था कायम कर सके, विदेशी राज्यों के साथ संबंध निभा सके और सरकारी कार्यों के अपेक्षित वित्त की व्यवस्था कर सके। अतः सरकार को जनता पर कर लगाने का अधिकार सब जगह होता है। आधुनिक युग में सरकार जनता के लिए बहुत तरह की सेवाएँ जुटाने लगी है, विशेषतः उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, परिवहन, संचार, मनोरंजन, रोजगार, विश्राम इत्यादि का विस्तृत प्रबंध करने लगी है। इससे 'कल्याणकारी राज्य' का विकास हुआ है।

(iv) प्रभुसत्ता :- राज्य का चौथा बुनियादी तत्व प्रभुसत्ता या संप्रभुता है। प्रभुसत्ता का अर्थ है, राज्य की ऐसी शक्ति जिसके बल पर वह अपने भू-भाग में अपनी आज्ञाओं और कानूनों का पालन करा सके, और बाहरी राज्यों के साथ बिना किसी दबाव के किसी तरह का लेन-देन, मैत्री या लगाव कर सके। राज्य अपनी प्रभुसत्ता के कारण ही विधिसम्मत बल-प्रयोग का अधिकार रखता है।